International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8, Issue 7, July - 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रेम और सौन्दर्य के कवि त्रिलोचन

डॉ० बिजेन्द्र विश्वकर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
बलदेव साहू महाविद्यालय, लोहरदगा

सारांश

प्रेम करूणा, आशा, परोपकार, कर्म सौन्दर्य में विश्वास रखने वाले हैं महाकवि त्रिलोचन शास्त्री, जो कि बाहर से कठोर और भीतर से तरल, ऊपर से दबंग और अन्दर से बहुत ही विनम्र व्यक्तित्व के धनी थे। त्रिलोचन जी निष्छलता स्निग्धता, उनकी जिन्दादिली लोगों को बहुत पसंद आती थी। वे ऐसे कवि थे जिसकी कथनी और करनी में भेद नहीं था। वे बहुत ही सरल और सहज जीवन जीते थे। आधुनिकता का असर तो लेशमाल भी उनके जीवन पर नहीं था। वे आम आदमी की तरह जीवन जीते थे, जबकि वे जनता की अज्ञानता गरीबी भूखमरी से परिचित थे फिर भी वे सिर उठाकर कहते हैं–

मैं उस जनपद का कवि हूं
जो नंगा है,
अनजान है,
भूखा है,
दूखा है।[1]

किसी भी कवि में प्रेम की करूणा और सौन्दर्य की छवि के बिना कोई भी कविता नहीं बनती है। हर बड़े कवि की भांति त्रिलोचन भी काव्य का मूल कारण प्रेम, सौन्दर्य, करूणा को ही मानते हैं।

वे एक ऐसे कवि हैं जो प्रगतिशील होने के साथ–साथ सौन्दर्य चेतना के प्रति भी सजग हैं। उनकी कविता, गीत, गजल जीवन में संघर्ष की प्रेरणा तो देते ही हैं साथ ही साथ जीवन के सौन्दर्य तक साक्षात्कार भी कराती हैं। यह प्रेम सिर्फ सौन्दर्य तक ही सीमित न होकर समूचे जीवन अस्तित्व में है। इस अस्तित्व का धरातल उन सामान्य प्रयत्नों और अनुभूतियों का है जो हमारे जीवन के यथार्थ परिवेश की उपज हैं। त्रिलोचन जी एक गजल में लिखते हैं।

''आप कहते हैं तो अपनी भी सुना देता हूं मैं
दिल के अन्दर जो छिपा है वह दिखा देता हूं मैं।
हूक उठती है हृदय में और गा लेता हूं मैं
आप उत्सुक हैं कहां से भाव लेता हूं मैं। [2]

त्रिलोचन बहुत ही चैतन्य कवि हैं जिनका हाथ सदैव समय की नब्ज पर था। उन्होंने बदलते वक्त में होने वाले परिवर्तनों को भी देखा समझा और उन्हें अपनी कविताओं गीतों गजलों में व्यक्त किया है। समाज में उपभोक्तावादी मानसिकता और अर्थवादी सोच के कारण जिस तरह से प्रेम, भाईचारा, ईमानदारी, नैतिकता, परोपकार आदि जीवन–मूल्यों का ह्रास और नकारात्मक जीवन मूल्यों का विकास हो रहा है इससे त्रिलोचन जी बहुत चिंतित थे।

''आजकल क्या कुछ इधर मेरे हृदय को हो गया
चुप ही चुप है, अब उसे रोना है क्या गाना है क्या
हंस के तुम ने क्यों कहा बालो तुम्हें क्या चाहिए,
तुम हो तो पाना है क्या और तुम को भी लाना है क्या''

त्रिलोचन जी हर वस्तु को बहुत ही जांच परखकर अपनी कविता में प्रयोग करते हैं। चीजों की स्वाभाविकता समाप्त होती जा रही है। रूप में भोलेपन की जगह समानापन, चतुराई भरी है। प्रेम मे नैसर्गिक लगाव नहीं है। झूठे, चाटुकारिता भरे अभिनंदनों–सम्मानों की धूम है। आत्मीयता का मतलब साज पैसा हो गया है त्रिलोचन जी इसीलिये प्रेम के छिछले–पन पर लिखते हैं–

''जिसको देखे, देखकर खो जाएं हम
रूप में वह शेष भोलापन नहीं।
प्रेम का वह वेग अब क्या हो गया
देह में वह रेशमी कंपन नहीं।
आदमी में आदमीयत क्या रही
पास में उसके अगर कंचन नहीं।''[4]

त्रिलोचन जी की कविता गीत गजल की जड़े लोक में बहुत गहराई तक धंसी हैं। वे मूलतः लोक जीवन के ही कवि हैं। इन्हें मिट्टी की गंध बहुत ही अच्छी लगती है इसीलिए वे मिट्टी को सोने से भी अधिक प्रेम करते हैं।

नामवर सिंह लिखते हैं– '' 'धरती' के बाद लगभग बीस वर्षों तक ज्यादातर उन्होंने सानेट ही लिखे। लगभग एक हजार................. वहीं सानेट जिसके लिये नागार्जुन कई बार

त्रिलोचन को डांट चुके थे बन्द करो यह सॉनेटबाजी।''[6] त्रिलोचन की बहुत सी कविताएं एक तफर प्रणय संबंधी तो दूसरी तरफ सामाजिक यथार्थ संबंधी, लेकिन प्रेम का सामाजिक संदर्भ ही सर्वाधिक मुखर है। प्रेम का उदात एवं यथार्थ चित्रण इन सानेटों में मुख्य हैं। इनमें न तो अतिशय भावुकता के लिये जगह है और न ही बौद्धिक संवेदनशील स्वरों के लिये। भावुकता और बौद्धिकता के बीच कलात्मक संयम। मुग्धवस्था में प्रेमानुभूमि की जागृति दिखाई पड़ती है।

''जब भौंरे ने आकर पहले पहले गाया
कली मौन थी। नहीं जानती थी वह भाषा
इस दुनिया की, कैसी होती है अभिलाषा
इससे भी अनजान पड़ी थी, तो भी आया
जीवन का वह अतिथि, ज्ञान का सहज सलोना
शिशु जिसका दुनिया में प्यार कहा जाता है।
....
बिन बुलाए जो आता है प्यार वही है
प्राणों की धारा उसमें चुप–चाप वही है''

रागात्मक चेतना, मानवीय मूल्य, सौन्दर्य चेतना और प्रेम त्रिलोचन जी की गजलों की खास विशेषता है। प्रेम को वे प्रगतिशीलता के आवेग में व्याज्य, अस्पृश्य या उपेक्षणीय कभी नहीं मानते। यह बात उनके समकालीनों–नागार्जुन, शमशेर, केदारनाथ अग्रवाल आदि की कविताओं में भी दिखाई पड़ती है। उनकी गजलों में प्रेम बहु–आयामी है। कहीं वे सौन्दर्य से अभीभूत हैं तो कही उलाहना या सुझाव देते हैं, कभी प्रिय की यादों में खो जाते हैं और कभी प्यार की विशेषताएं बताते हैं–

''यह भी जीने की एक सूरत है
मन के मंदिर में उनकी मूरत है।
प्रेम में दिन, घड़ी नहीं कुछ भी
व्यर्थ उसके लिये मूहूरत है।''[6]

त्रिलोचन की प्रेमानुभूति घरेलू एवं पारिवारिक है। उनके समय में प्रेम स्वकीया नहीं था उस दौर में त्रिलोचन ने स्वकीया प्रेम को प्रतिष्ठित किया जिसका उनके समकालीन प्रगतिशील कवियों ने भी समाहित किया और स्वकीया–प्रेम परम्परा को गति और दिशा दी–

''जब से देखा तुम्हें, तुम्हीं को पाना चाहा
जीवन का क्रम अकस्मात कुछ और हो गया
जब तक जो कुछ पाया उसका मूल्य खो गया
हृदय–सिन्धु की गहराई को तुमने चाहा।'' [8]

प्रकृति प्रेम त्रिलोचन शास्त्री का स्थाई भाव है। प्रकृति के विभिन्न दृश्यों पक्षों का चित्रण भी खूब किया है। प्रकृति की दृश्यता का अनुभव पदे–पदे किया जा सकता है। कहीं–कहीं कभी–कभी परम्परागत प्रतीत होता है तो कहीं–कहीं मौलिक भी–

''खिली दृश्यता आज शरद ऋतु कुछ ऐसी
होतो है दे जाती है वह साज की धरती
अपने आप बदल जाती है, नव श्री जैसी
आती है और सुनहले घानों से मन हरती।

त्रिलोचन किसानी संवदेना के कवि हैं प्रकृति की दुनिया में प्रवेश करते हैं तो ग्रामों–नगरों, गिरि–उपव्य का कांतारों में भ्रमण तो करते हैं पर सबसे ज्यादा वे रमते हैं–

''ऊपर बंजर में, पलिहर में खलिहानों में
मेड़ों पर, घर तें, आंगन में मैदानों में
शिखी–कृषक के लास–हासमय उपहारों में''

निष्कर्ष–

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि त्रिलोचन प्रेम सौन्दर्य, राग–विराग के कवि हैं उनकी कविताओं में प्रेम का कोमल और कठोर दोनों रूप देखने को मिलता है। एक तरफ जहां अपने जनपद की मिट्टी की गंध से प्रेम हैं, वहीं दूसरी तरफ देश के किसानों की दशा, प्रकृति की विभिन्न ऋतुओं, विभिन्न फसलों आदि के प्रति भी अनन्य प्रेम है। इनकी कविताओं गीतों गजलों में एक प्रेमी सच्च प्रेम की तलाश करता हुआ बार–बार दिखाई पड़ता है, वह कोई और नहीं बल्कि त्रिलोचन जी स्वयं है।

संदर्भ

- 'आजकल' अप्रैल 2010 सं0 सीमा सोझा पृष्ठ 44, आजकल प्रकाशन विभाग लोदी रोड नई दिल्ली
- वही पृष्ठ 44
- 'त्रिलोचन संचयिता' सं0 ध्रुव शुक्ल वाणी प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ–399
- 'आजकल' अप्रैल 2010 सं0 सीमा ओझा पृष्ठ–45, आजकल प्रकाशन विभाग लोदी रोड नई दिल्ली
- 'पत्तल को थाली की मर्यादा'– चारू गोयल वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली पृष्ठ–63
- वही, पृष्ठ–63
- 'आजकल' अप्रैल 2010 सं0 सीमा सोझा पृष्ठ 45, आजकल प्रकाशन विभाग लोदी रोड नई दिल्ली
- 'उस जनपद का कवि हूं', त्रिलोचन पृष्ठ–24
- 'कविता का जनपद जनपद की कविता' परमानंद श्रीवास्तव, आधारशिला–2009 पृष्ठ–124